ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 3, Issue 1, January 2013 Impact Factor 2.809 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

लाला लाजपत राय और **दलित**

राजेश राँझा, अस्सिटेंट प्रोफेसर (इतिहास),

शहीद उदम सिंह, राजकीय महाविधालय, मटक माजरी, इंद्री (करनाल)

लाला लाजपतराय भारतीय राष्टीय आदोलन के प्रमुख नेताओं में से एक थे लाला जी ने राजनीती के साथ--२ भारतीय समाज को उन्नत बनाने व् समाज की कुरीतियों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इन कुरीतियों में जातिय भेदभाद भारतीय समाज की एक प्रमुख बुराई रही है जाति व्यवस्था में समाज के एक वर्ग को निम्न दृष्टि से देखा जाता था यह वर्ग था दलित या अनुसूचित जातिया ,समाज में इन लोगों की स्थिति बढ़ी दयनिय थी इन लोगो को अछुत माना जाता था इन्ही किसी भी तरह के धार्मिक ,आर्थिक व समाजिक अधिकार प्राप्त नहीं थे |

दलित वर्ग अन्याय व निद्यता के पेरो के नीचे कुचले जा रहे थे इस समय हिंदु समाज में जाति व्यवस्था की कठोरता विष के समान बनी हुई थी |

अंग्रेजो ने दलितों की दयनिय स्थिति का फायदा उठाने का प्रयास किया इनको राष्टीय आदोलन से दूर करने के लिए इन्हें स्वर्ण जातियां के विरुध एक शस्त्र के रूप में प्रयोग करने के प्रयास किये भारत में अपने शासन को मजबूत करने के लिए उन्होंने दलित वर्गों को अपनी राजनितिक के मोहरे के रूप में प्रयोग करना शुरू किया उन्होंने दलितों को धन व नोकरी का लालच देकर इसाई बनाने पर बल दिया इससे भारतीय समाज में भेदभाव बढने लगा समाज का एक बढ़ा हिस्सा राष्टीय आदोंलन से दूर हो रहा था

लाला लाजपतराय ने जब यह देखा की समाज का एक बड़ा वर्ग सामाजिक सुख से वंचित है व राष्टीय आदोंलन व हिंदु धर्म से दूर हो रहा है तो उन्होंने इस वर्ग को राष्टीय व हिंदु धर्म से पुन जुड़ने व समाजिक अधिकार दिलाने का बीड़ा उठाया उन्होंने जातिय भेदभाव मुख्य रूप से अश्प्रस्यता की कटु आलोचना की उन्होंने इस समाजिक भेदभाव को मिटाने के लिए आर्य समाज का आश्रय ग्रहण किया |

लाला जी ने इस बात को कभी उचित नहीं माना की समाज का एक बढ़ा वर्ग सामाजिक चेतना और सामाजिक सुख से वंचित कर दिया जाये उन्होंने दलितों को समानता का अधिकार दिलाने के उदेश्य से दलितोद्रार के लिए निरतर संघर्ष किया लाला लाजपतराय उन समाज सुधारको में से है जिन्होंने बुधिजिवियो को भांति इस बात पर जोर दिया की ऐसे समाज का निमार्ण किया जाना चाहिए जिसमे एकरूपता हो उन्होंने हिन्दुवाद के कट्टरवाद को मानब्तावाद के लिए कंलक माना और कहा इसे बदलना समाज के लिए अत्यंत आवश्यक है |

लाला जी ने उच्च जाति के लोगो से अपील की वह अपने आपको मन से दुसरे से उचा मानना व गमंड करना आदि त्याग दे किसी को अछुत मानना भी छोड़ दे जिससे हमारे देश से करोड़ो गरीब व पिछड़े लोगो का उदार हो सके इन लोगो को समान अवसर दिए जाने चाहिए जिससे वह अपनी शमता के अनुसार आगे बढ़ सके |

लाजपतराय का मानना था की जब तक हमारी सामाजिक व्यवस्था में जातिय भेदभाव रहेगा और निम्म वर्ग के लोगो को भाईचारे की दृष्टि से नहीं देखा जाएगा तब तक यूरोप के शक्तिशाली और उच्च बोद्रिक स्तर वाले देश हमें ग्रना की दृष्टि से देखते रहेगे आज दलित वर्ग की अवहेलना के कारण हम विश्व के देशो के सामने निम्नं दृष्टि से देखे जाते है |

उन्होंने पशिचम पढाई पढ़े हुए चोटी के हिन्दुओं को भी लताड़ा जो बाते तो समानता व स्वतंत्रता की करते है परन्तु अछुतउ के साथ -२ बैठने व खाना खाने से हिचकचाते है उन्होंने कहा की अछुत वर्ग हिन्दुवाद का ही परिणाम है अन्य धर्मो में इस प्रकार का भेदभाव नहीं है अछुतओ की सबसे अधिक जनसंख्या भी हिन्दुओं में ही है एक हिंदु दलित के साथ बैठकर खाना खाने उसके द्वारा छुए पानी पीने व उसके साथ कालिन पर बैठने के लिए उच्च जाति के लोग तेयार नहीं है परन्तु यदि व्ही व्यक्ति मुसिलम या इसाई बन जाता है तो उच्च जातियों द्वारा उनका हसकर स्वागत किया जाता है इस प्रकार स्पष्ट है की हिंदु अपनी जाति के छीटे लोगो से भेदभाव बनाए रखना चाहता है यह व्यवस्था केवल हिंदु जाति में ही विदमान है |

लाजपतराय ने हिंदु दलित जातियों द्वारा ईसाईं धर्म में परिवर्तित होने को बड़ी चिंता का विषय माना | ईसाईं मसीनिरिया विभिन्न तरीको से दलित वर्ग को ईसाईं बना रही थी उदाहरण के तौर पर अकाल के समय बहुत सी ईसाईं मसीनिरिया परोपकारी कार्य कर रही थी परन्तु उनका वास्तविक उधेश्य पीड़ित लोगो को ईसाईं बनाना था | ईसाईं मसीनिरियों के कार्यकर्ता ब्राह्मणों का वेश धारण कर अकाल पीड़ित छेत्रो में घूमते थे और हिन्दुओं के अनाथ बच्चों को ईसाईं अनाथालयों के एजेंटो के पास ले जाते थे, और उनको ईसाईं बनाते थे, ऐसी घटनाओ को सुनकर लाला जी का हृदय क्रोध और लज्जा से भर गया उन्होंने उसी समय निश्चय किया कि आकाल पीड़ितों की सहायता मेरे जीवन का उधेश्य होगा इसलिए उन्होंने स्थान -2 पर अनाथालय खुलवाए उन्होंने धर्म परिवर्तन का सक्त विरोध करते हुए सरकार से कहा कि गरीब वा अनाथ बच्चों को ईसाईं बनाने का प्रयत्न ना किया जाए उन्होंने हिंदू धर्म को छोड़कर दुसरे धर्मो को जाने वाले लोगो को पुनः हिंदू धर्म में लेन के लिए भी प्रयत्न किए |

आर्य समाज के माध्यम से शुद्धी आन्दोलन चलाने का फैसला किया गया ताकि जो हिंदु लोग मुस्लिम या ईसाईं धर्म में चले गये हैं उन्हें शुद्ध कर हिंदु धर्म में लाया जा सके | शुद्धी आन्दोलन में तहत शुद्धता 3 चरणों में की जाति थी :

(1) सर के बाल काटना (2) हवन करना (3) गायत्री मंत्र का उच्चारण करना और पवित्र धागे को ग्रहण करना –

इस आन्दोलन के तहत बहुत से लोगो को शुद्ध कर वापिस हिंदी धर्म में परिवर्तित किया गया |

जम्मू कश्मीर में इस आन्दोलन के तहत 1000 लोगों को आर्य समाज में सम्मिलित किया गया | इसी प्रकार सियालकोट जिले में 36000 लोगो को शुद्धी आन्दोलन से हिंदू धर्म में लाया गया, गुरदारपुर और लाहोर में हजारों लोगो को हिंदू धर्म में वापिस लाया गया इस आन्दोलन से सबसे अधिक फायदा यह हुआ कि कट्टर धार्मिक लोग भी दलित के प्रति कर्तव्य को समझने लगे और आर्य समाज के प्रति सहानुभूति पूर्ण रवैया अपनाने लगे | लाजपत राय दलितों को हर प्रकार से सामजिक धार्मिक अधिकार देने के पक्ष मे थे उन्होने कहा कि गरीब व पिछडे लोगो के साथ भाइयो जैसा व्यवहार करना चाहिए उनकी नसों मे भी वही खून दोड़ रहा है जो हमारी नसों मे है | उनका मानना था कि मन्दिरों के द्वार अछूतो के लिय खोल देने चाहिए वह दलितो मे शिक्षा के प्रसार के पक्ष मे थे| शिक्षा दलितो को समाज मे उचित अधिकारियो को प्राप्त करने मे सहायता करगी | शिक्षा उनके बच्चो को इस स्तर तक ले जायगी जहा पर समाज के सभी वर्ग उनसे सम्बन्ध बनाने मे संकोच नहीं करेगे इससे उनकी सामजिक प्रतिष्ठा बड़ेगी | लाला जी ने कई हिन्दू संस्थाओ के माध्यम से यह प्रयत्न किया कि स्कूलों मे दलित वर्गों के छात्रों के प्रवेश को प्रोत्सान मिले व भेदभाव समाप्त हो | उनका मानना था कि कोई भी व्यक्ति

अपने कार्य धर्म या जाति के कारण घ्रणा का पात्र नहीं होना चाहिए | प्रत्येक व्यक्ति जिसका घर भारत मे है उसकी जाति धर्म या व्यवसाय कुछ भी हो वह एक भारतीय है | वह एक हिन्दू राष्ट्र का सदस्य है उसको अधिकार है कि उसे भी अन्य लोगो कि भांति सम्मान मिले | इस प्रकार लाला जी ने दलितों के उत्थान के लिये महत्वपूर्ण कार्य किये | वह समाज मे समानता के पक्षधर मे थे असप्रश्यता को तो उन्होने हिन्दुत्व पर कलंक माना | वह चाहते थे कि समाज मे दलितों को उचित सम्मान मिले उनका मानना था कि ब्रिटिश सरकार दलितों को अलग कर उनहे मुख्य राष्टीय धारा से काट कर अलग करना चाहती है ताकि राष्टीय आन्दोलन को कमजोर किया जा सके लाला जी ने दलितों की समसयाओ को बहुत महत्व पूरन माना व आर्य समाज के मध्यम से यह प्रयतन किया कि उनहे समाज मे उचित स्थान मिले व हिन्दू धर्म से व राष्ट्रीय धारा से जुडे रहे | लाला जी ने कहा था कि दलितों को ऊपर उठाना सबसे पवित्र व ऊँचा मिशन है उन्होने अपने जीवन का सबसे प्रमुख उद्देश्य दलित उद्धार कार्य कप माना व काफी हद तक इसमे सफलता भी प्राप्त की |

संदर्भ

1. मोहन लाल, लाला लाजपत राय का जीवन और कार्य (होशियारपुर १९६५) पृष्ट १५
2. प्रशोतम नगर – पृष्ट 227
3. एम0 एन0 श्री निवास आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन के0 डब्लू जोन्स आर्यधर्म (नई दिल्ली १९७६ प्र0 १६ प्रष्ट १७)|
4. धनपति पांडे दा आर्य समाज एंड इण्डियन नेशनलिज्म (नई दिल्ली १९७२) प्रष्ट -७७
5. डी0 सी0 सोहटा लाला लाजपत राय हिज लाइफ एंड यांट टूडिके (१९७७)